Answers to RSPL/1

खंड–क

1. (क) 'क्रैच' व 'प्ले स्कूल' में बच्चों को भेजने की स्थिति उत्पन्न होने के पीछे के कारणों में आज के युग में नाभिक या केंद्रिक परिवारों की बहुलता तथा माता-पिता दोनों का कामकाजी होना प्रमुख हैं। आज लगभग सभी माता-पिता कामकाजी हैं और वे अपने कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहते हैं। नाभिक या केंद्रिक परिवार होने के कारण घर में अन्य बड़े-बुजुर्ग सदस्यों का अभाव रहता है, जो माता-पिता की अनुपस्थिति में बच्चों को सँभाल सकें। परिणामस्वरूप बच्चों को 'क्रैच' या 'प्ले स्कूल' में भेजना माता-पिता की विवशता हो जाती है।

(ख) मासूम, अबोध बच्चों का यह अधिकार है कि वे अपना समय माता-पिता के साथ बिताएँ, किंतु आज कामकाजी माँ-बाप अथवा अन्य व्यस्त अभिभावक अपने मासूम, अबोध बच्चों को 'क्रैच' अथवा 'प्ले स्कूल' में भेज देते हैं, जहाँ उन्हें माता-पिता व दादा-दादी के समान प्यार-दुलार नहीं मिल पाता है। अतः माता-पिता की व्यस्तता के कारण बचपन अपनों का प्यार पाने के अधिकार से वंचित होता जा रहा है।

(ग) 'क्रैच' कल्चर में पले-बढ़े बच्चों से यह अपेक्षा करना उचित नहीं होगा कि वे आगे चलकर अपने माता-पिता के प्रति बहुत उदार होंगे तथा पारिवारिक संस्कारों को आत्मसात करते हुए जीवन व्यतीत करेंगे।

(घ) जब बचपन पर माँ-बाप की हसरतों तथा व्यस्तताओं का बोझ नहीं लादा जाता, तब उनके अंदर सौम्यता, निश्छलता, मौज़-मस्ती, नटखटता जैसे स्वाभाविक गुण दिखाई देते हैं और इन गुणों के साथ वे बचपन का भरपूर आनंद ले पाते हैं।

(ङ) गाँठ बाँधना–अच्छे बच्चे इस बात की गाँठ बाँध लेते हैं कि उन्हें कभी बुराई की ओर नहीं जाना है।

2. (क) काव्यांश के आधार पर अपने भारत देश की महत्त्वपूर्ण चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(*i*) हमारे देश में गंगा व गोदावरी जैसी पवित्र नदियाँ हैं, जिनसे देश की धरती सिंचित होती है।

(*ii*) हमारा देश प्राकृतिक दृष्टि से विविधताओं वाला देश है।

(*iii*) हमारा देश वीरों का देश है, जहाँ शकुंतला-दुष्यंत के पुत्र भरत ने सिंह को पकड़कर उसके दाँत गिनने का खेल खेला था।

(*iv*) यहाँ की भूमि पर अनेक फ़सलें लहलहाती हैं, इसी कारण इसे अन्नपूर्णा के समान माना जाता है।

(ख) 'हमारे देश का पानी हमें वह शक्ति है देता, भरत-सा एक बालक भी पकड़ वनराज को लेता।' प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों में देश के निवासियों की वीरता एवं साहस से परिपूर्ण अतीत का वर्णन किया गया है। शकुंतला-दुष्यंत के पुत्र भरत की वीरता के प्रसंग पर आधारित इन पंक्तियों में बताया गया है कि अपने देश के पानी में ही अत्यधिक साहस और वीरता के गुण विद्यमान हैं, क्योंकि यहाँ के बच्चे तक में वनराज (सिंह) को पकड़कर उसके दाँत गिनने की क्षमता है।

(ग) सिकंदर एवं चंगेज़ ख़ाँ जैसे विदेशी आक्रमणकारियों को यहाँ मुँह की खानी पड़ी थी।

(घ) 'नया इतिहास·····जय हो।' – पंक्तियों में कवि की अभिलाषा है कि इस नए वैज्ञानिक युग में नई सोच व नए-नए अनुसंधानों द्वारा देश की पूरे विश्व में जय-जयकार हो।

(ङ) उपसर्ग–'सम्', मूल शब्द–'अर्पण'।

खंड–ख

3. (क) हिंदी की अध्यापिका जी ने मेरी कविता को विद्यालय पत्रिका में प्रकाशित किया और ऐसा करके मुझे और भी अच्छा लिखने के लिए प्रेरित किया।

(ख) जो व्यक्ति परिश्रमी होता है, वह कभी असफल नहीं रहता।

(ख) मिश्र वाक्य।

4. (क) हमसे इतना तेज़ कैसे दौड़ा जाएगा?

(ख) कुछ बच्चों के द्वारा अक्सर जंक फ़ूड खाया जाता है।

(ग) आओ, अब चला जाए।

(घ) माँ ने स्वादिष्ट भोजन बनाया।

5. (क) **जयचंदों** – जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, संबंध कारक।

(ख) **ध्यानपूर्वक** – रीतिवाचक क्रियाविशेषण, विशेष्य क्रिया–'करना चाहिए'।

(ग) **कर रहा है** – सकर्मक क्रिया, पुल्लिग, एकवचन, वर्तमान काल।

(घ) **अनेक** – अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिग, बहुवचन, विशेष्य– 'लोग'।

6. (क) रौद्र रस का अनुभाव–चेहरा लाल हो जाना, हाथ-पैर पटकना, मारने को दौड़ना आदि।

(ख) 'करुण रस' का मूल स्थायी भाव 'शोक' है।

(ग) प्रस्तुत पंक्तियों में 'रौद्र रस' है।

(घ) 'वीर रस' से संबंधित काव्य-पंक्तियाँ–

नकली व्यूह युद्ध की रचना और खेलना खूब शिकार।
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार॥

खंड–ग

7. (क) 'घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं।' इस पंक्ति द्वारा लेखिका ने पुराने ज़माने में मौज़ूद आस-पड़ोस के स्नेहयुक्त संबंधों को उजागर किया है। वे बताना चाह रही हैं कि उन दिनों जीवन केवल अपने घर तक ही नहीं सिमटा हुआ था, बल्कि पड़ोस भी घर के समान ही हुआ करता था।

(ख) महानगरों में मौज़ूद 'फ़्लैट-कल्चर' में जीवन केवल स्वयं तक ही सीमित होकर रह गया है, जिससे जीवन असहाय और असुक्षित भी हो गया है। किसी को किसी से कोई मतलब नहीं रह गया है। इसके विपरीत लेखिका के परंपरागत 'पड़ोस कल्चर' में घर की दीवारें पड़ोस तक फैली होती थीं यानी जीवन केवल अपने घर एवं घरवालों तक ही नहीं सिमटा था। मोहल्ले के लोग एक-दूसरे से अपनत्व के बंधन में बँधे थे। यही कारण है कि वह जीवन अधिक आनंदपूर्ण व सुरक्षित था।

(ग) लेखिका की प्रारंभिक कहानियों के पात्र उनके मोहल्लों के जीते-जागते व्यक्ति थे। उनके सामीप्य की छाप लेखिका के मन पर बहुत गहरी पड़ी थी। इसी अपनत्व के कारण वे उनकी कहानियों में सहज भाव से उतरते चले गए।

8. (क) फ़ादर बुल्के का स्वभाव ममता, सद्भावना व अपनत्व से परिपूर्ण था। उनके हृदय में सबके लिए करुणा का विशाल सागर हिलोरें लेता था। वे हर किसी को अपनी बाँहें खोलकर गले लगाने के लिए उत्सुक रहते थे। हर किसी से घर-परिवार के बारे में तथा उसके निजी दुख-तकलीफ़ के बारे में पूछे बिना वे नहीं रह सकते थे। इसी सद्भावना, ममत्व व अपनत्व की दिव्य चमक उनके मुख पर सदैव विद्यमान रहती थी। उनके इन्हीं गुणों के कारण लेखक ने उन्हें 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' कहा है।

(ख) बालगोबिन भगत की पुत्रवधू पति की मृत्यु के बाद ससुराल में ही रहकर भगत जी की सेवा करना चाहती थीं, किंतु बालगोबिन भगत चाहते थे कि पुत्रवधू का भाई उसे घर ले जाकर उसका विवाह किसी योग्य व्यक्ति से कर दे। वे नहीं चाहते थे कि उनकी पुत्रवधू अपना संपूर्ण जीवन विधवा के रूप में गुज़ारे। इसी कारण वे अपनी पुत्रवधू की अपने पास रहकर अपनी सेवा करने की इच्छा पूरी नहीं कर सके।

(ग) द्विवेदी जी का मानना था कि यदि स्त्रियों को शिक्षा देने से उनपर उसका नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, तो फिर लड़कों के लिए बनाई गई शिक्षा-प्रणाली उनपर केवल सकारात्मक प्रभाव कैसे छोड़ सकती है? उन्होंने प्राचीन काल की अनेक विदुषियों का उदाहरण दिया है। स्त्रियों को अशिक्षित रखना बिल्कुल भी उचित नहीं है। आज परिस्थितियाँ बदल गई हैं, इसलिए उन्हें अच्छी शिक्षा दी जानी चाहिए। जिस प्रकार आवश्यकता के अनुसार पुराने नियमों को तोड़कर हमने नए नियम बनाए हैं, उसी प्रकार स्त्रियों की शिक्षा के लिए भी नए नियम बनने चाहिए। 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्को का खंडन' पाठ में द्विवेदी जी ने दूरगामी व खुली सोच के साथ यही अकाट्य तर्क देकर पुरातनपंथी स्त्री-शिक्षा विरोधी मानसिकता पर गहरा कटाक्ष किया है।

(घ) यदि संस्कृति कल्याण भावना से रहित हो जाती है, तो उसका परिणाम असंस्कृति के रूप में सामने आता है। कोई भी आविष्कार जब मानव कल्याण की भावना से जुड़ता है, तभी हम उसे संस्कृति कहते हैं, किंतु जब आविष्कार करने की योग्यता का उपयोग विनाश करने के लिए किया जाता है, तब वह मानवता को विनाश की ओर ले जाता है। अतः कहा जा सकता है कि संस्कृति कल्याण भावना से जुड़ी होने के कारण ही संस्कृति है। जब यह इससे पृथक होती है, तब यह मानवता के विनाश का कारण बन जाती है।

9. (क) 'छाया मत छूना' काव्य-पंक्ति में 'छाया' का अर्थ अतीत तथा उसकी खट्टी-मीठी यादों से है। कवि इसे छूने से मना इसलिए कर रहा है, क्योंकि अतीत की स्मृतियों में खोए रहने से वर्तमान की उमंग भी चली जाती है और व्यक्ति का जीवन दुख से भर जाता है।

(ख) कविता के अनुसार अतीत की स्मृतियों में खोए रहने से व्यक्ति को सदैव पीड़ा का ही अनुभव होता है। इससे जीवन में खुशियाँ नहीं मिल पातीं। इसलिए अतीत के सुख को याद करके वर्तमान के दुख को बढ़ाना बिल्कुल भी उचित नहीं है। व्यक्ति के लिए अतीत की स्मृतियों से निकलकर वर्तमान में जीने का मार्ग ही उचित है।

(ग) 'जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी' काव्य-पंक्ति में 'स' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

10. (क) 'अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ'—यह मुनि विश्वामित्र मन-ही-मन उस समय सोचते हैं, जब पशुराम बड़बोलेपन में कहते हैं कि वे पलभर में लक्ष्मण को मार डालेंगे। परशुराम को यह कहते देख वे सोचते हैं कि क्रोध में परशुराम जी ने कितनी सरलता से यह कह दिया कि वे अपने फरसे से लक्ष्मण को मार डालेंगे, किंतु उन्होंने यह विचार नहीं किया कि जिस बालक को वे गन्ने के रस की खाँड़ समझ रहे हैं, वह लोहे से बना खाँड़ा यानी तलवार के समान अस्त्र हैं, जिसे काट पाना इतना सरल नहीं है।

(ख) जल में रहकर भी जल से अछूते रहने वाले 'कमल के पत्तों ' तथा 'तेल की गागर' के दृष्टांत द्वारा गोपियों ने उद्धव पर यह व्यंग्य किया है कि जिस प्रकार दुर्भाग्यवश 'कमल के पत्ते' तथा 'तेल की गागर' जल में रहकर भी जल के स्पर्श के सुख से वंचित रह जाते हैं, उसी प्रकार श्रीकृष्ण के समीप रहते हुए भी उद्धव ने प्रेम से स्वयं को अछूता रखकर योग से संबंध जोड़ा है। वास्तव में उनका ऐसा करना उनका दुर्भाग्य है।

(ग) 'कन्यादान' कविता में वस्त्रों और आभूषणों को स्त्री-जीवन के बंधन इसलिए कहा गया है, क्योंकि इनपर मुग्ध होकर स्त्री ससुराल के हर बंधन को सहर्ष स्वीकार कर लेती है। परिणामतः उसका अपना व्यक्तित्व घर-गृहस्थी की ज़िम्मेदारियों तक ही सिमटकर रह जाता है और उसका पूर्ण विकास नहीं हो पाता है।

(घ) मुख्य गायक के लिए संगतकार की भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। वह उसके गायन में सहयोग करके उसके गायन को प्रभावी बनाने में निःस्वार्थ भाव से सहयोग करता है। जब लय की ऊँचाई पर जाकर मुख्य गायक की आवाज़ काँपने लगती है तथा उसका उत्साह मंद पड़ने लगता है, तब संगतकार उसी लय में अपना स्वर साधकर उसे सहारा व प्रोत्साहन देता है। वह अपनी विशिष्टता दिखाने का प्रयास नहीं करता और गायन में मुख्य गायक की केवल सहायता करने को ही अपना धर्म मानता है।

11. दुलारी टुन्नू के प्रेम से अत्यधिक प्रभावित हो गई थी। उसने होली के अवसर पर गांधी आश्रम से उसके लिए धोती लाने वाले टुन्नू को फटकार तो लगाई थी, किंतु उसके चले जाने के बाद उसे टुन्नू के खद्दर के कुरते व गांधी टोपी का स्मरण हुआ, तो उसे समझते देर न लगी कि टुन्नू स्वतंत्रता-आंदोलन में सम्मिलित हो गया है। यहीं से उसके मन के किसी कोने में दबे टुन्नू के प्रति प्रेम ने उसके अंदर भी देशभक्ति की चिंगारी सुलगा दी और इसी कारण उसने विदेशी मिलों में तैयार की गई तथा फेंकू सरदार द्वारा लाई गई महँगी साड़ियाँ स्वराज आंदोलनकारियों द्वारा फैलाई चादर पर फेंक दी। वास्तव में प्रेम व देशभक्ति के लिए किया गया उसका यह छोटा-सा त्याग, उसके चरित्र की महानता का द्योतक है। आज समाज में प्रेम की पवित्रता प्रभावित हो रही है, देशभक्ति एवं त्याग जैसे जीवन-मूल्यों से आज की पीढ़ी दूर होती जा रही है। वह केवल वही कार्य अधिक उपयोगी समझती है, जो उसके लिए हितकारी हो, ऐसे में दुलारी के इस त्याग से आज की पीढ़ी को पवित्र प्रेम, देशभक्ति, त्याग आदि मूल्यों की सीख लेनी चाहिए, ताकि इन्हें अपनाकर वह जीवन को केवल अपने स्वार्थ तक न समेटे, वरन यह समझे कि जीवन का सच्चा सुख उदात्त गुणों में निहित है।

अथवा

लेखक ने युद्ध के समय भारत की पूर्वी सीमा पर अपने थोड़े से स्वार्थ के लिए सैनिकों द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी में बम फेंककर हज़ारों मछलियों को मारने की क्रूरतापूर्ण, अमानवीय घटना तथा हिरोशिमा पर अमेरिका द्वारा अणुबम के प्रयोग वाली अति अमानवीय घटना का वर्णन किया है। ऐसी अमानवीय व क्रूरतम घटनाएँ विज्ञान के अनुचित एवं संवेदनहीन प्रयोगों से रुदन करती एवं बुरी तरह प्रभावित होती मानवता की पुकार को मनुष्य तक पहुँचाती हैं तथा उससे ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न करने का आह्वान करती हैं।

ऐसी घटनाओं को मानवतावादी सोच, सद्भावना, मेल-जोल, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा 'जियो और जीने दो' की भावना जैसे जीवन-मूल्यों के विकास द्वारा रोका जा सकता है। इन जीवन-मूल्यों से मंडित कोई भी राष्ट्राध्यक्ष महाविनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग नहीं करेगा, जिससे मानवता को हानि नहीं उठानी पड़ेगी। प्रत्येक राष्ट्राध्यक्ष को ताजपोशी के समय वैश्विक शांति का सच्चा रक्षक बनने की शपथ भी दिलवाई जानी चाहिए, ताकि अपने कार्यकाल में उसे इस शपथ का ध्यान रहे। फलतः मानवता को आँसू न बहाने पड़ें।

खंड–घ

12. (क) **स्वच्छता ही सेवा : एक पावन पहल**

गांधी जी कहा करते थे कि "स्वच्छता भगवान का दूसरा रूप है।" वे स्वच्छता के बिना जीवन को अपूर्ण मानते थे। उन्होंने इसके महत्त्व से देशवासियों को अवगत करवाया। साबरमती आश्रम एवं जहाँ भी वे रहे, वहाँ उन्होंने स्वयं सफ़ाई करके एक महान आदर्श प्रस्तुत किया। वे अपना शौचालय स्वयं साफ़ किया करते थे। वे सत्य-अहिंसा सहित स्वच्छता के सच्चे दूत थे। उनके 148 वें जन्मदिवस पर वर्ष 2017 में भारत सरकार ने 15 सितंबर से 2 अक्टूबर तक 'स्वच्छता ही सेवा' पखवाड़े का आयोजन किया। इस पखवाड़े में संपूर्ण देश ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सरकारी दफ़्तर हो या स्कूल, घर हो या प्राइवेट संस्थान, सभी जगह इस पखवाड़े में स्वच्छता से जुड़े अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य लोगों को स्वच्छता के महत्त्व से परिचित करवाना था। माननीय प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर चल रहे 'स्वच्छता ही सेवा' पखवाड़े ने स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक बनाने का कार्य किया। देशभर में नुक्कड़ नाटकों, कविताओं, उद्घोषों द्वारा विद्यार्थियों, खिलाड़ियों, युवाओं एवं अन्य लोगों का भी भरपूर समर्थन मिला।

बापू की भावनाओं का सम्मान करते हुए आज सभी को स्वच्छता को भगवान का दूसरा रूप मानना चाहिए तथा अपने घर-आँगन, गली-मुहल्लों आदि में सफ़ाई की व्यवस्था करने के लिए कमर कस लेनी चाहिए। आज यदि सभी सफ़ाई को अपना कर्तव्य मान लें, तो स्वच्छ परिवेश में जीवन जीने का अधिकार सबको मिल जाएगा। परिवेश के साथ-साथ तन और मन की स्वच्छता भी आवश्यक है। मन व तन की गंदगी के प्रति भी लोगों को जागरूक होना चाहिए, क्योंकि मानसिक अस्वच्छता भी स्वयं व्यक्ति तथा संपूर्ण समाज के लिए हानिकारक बन जाती है।

समाचार-पत्र, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को देखकर कहा जा सकता है कि माननीय प्रधानमंत्री जी के आह्वान का काफ़ी असर इस अभियान पर पड़ा और इसे देश के भावी कर्णधारों यानी विद्यार्थियों का भी काफ़ी समर्थन मिला। उन्होंने अपने स्कूल, अपनी कक्षाओं को स्वयं साफ़ करके यह संदेश दिया कि वे स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्ध हैं। विराट कोहली सहित सभी खिलाड़ियों द्वारा 01 अक्टूबर को भारत-ऑस्ट्रेलिया मैच के दौरान 'स्वच्छता ही सेवा' पखवाड़े को पूरा समर्थन मिला। खिलाड़ियों एवं विद्यार्थियों के साथ-साथ आम आदमी की भी इसमें समान भागीदारी रही और उन्होंने भी स्वच्छता के प्रति अपना पूरा समर्थन व्यक्त किया। निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि 'स्वच्छता ही सेवा' जैसी पहल देश में स्वच्छता के प्रति एक वातावरण तैयार करने तथा स्वच्छता के प्रति उदासीन लोगों को स्वच्छता का पाठ पढ़ाने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुई हैं। ये पंक्तियाँ वातावरण में हमेशा गूँजती रहेंगी कि "हम सबने मिलकर ठाना है। भारत को स्वच्छ बनाना है।"

(ख) **इंटरनेट-प्रयोग की अति : समस्या एवं समाधान**

आज का युग भौतिकवादी युग है। आज मनुष्य के जीवन को विज्ञान के चमत्कारों ने अनिवार्य रूप से प्रभावित किया है। ऐसे ही चमत्कारों में से एक चमत्कार है—इंटरनेट। आज के इस संचार युग में इस आविष्कार ने अपनी ऐसी जगह बनाई है, जिसके बिना आज किसी भी चीज़ की कल्पना नहीं की जा सकती। आज इसका प्रयोग बच्चे, युवा, अधेड़, वृद्ध सभी कर रहे हैं। स्मार्ट मोबाइल फ़ोन के माध्यम से इसने आज सभी को अपने पाश में बाँध लिया है।

आज जिस तेज़ी से इसकी लत बढ़ रही है, वह भविष्य के लिए बहुत अच्छा संकेत नहीं है। आज व्यक्ति एक समय भोजन छोड़ सकता है, किंतु एक दिन के लिए डेटा पैक फ़ोन से हट जाए, तो वह इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। एक सर्वेक्षण के अनुसार, आज महानगरों में रहने वाले युवा अपनी दिनचर्चा के 4 से 5 घंटे व्हाट्सएप, फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम आदि पर बिताते हैं। विद्यार्थियों में भी इसकी लत बढ़ रही है, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है। अपना अधिक समय मोबाइल फ़ोन या लैपटॉप आदि पर बिताने से उनके सामने स्वास्थ्य-समस्याएँ भी आने लगी हैं। आभासी दुनिया (वर्चुअल वर्ल्ड) के आकर्षण में खोए रहने से व्यक्ति की परिवार से दूरी बढ़ती जा रही है। व्यक्ति परिवार में रहकर भी अपनी फ़ोन की दुनिया में खोया रहता है, जिससे परिवार के सदस्यों के संबंधों में पहले जैसा स्नेह दिखाई नहीं दे रहा है।

इंटरनेट प्रयोग की अति ने आज व्यक्ति को बहुत सारी समस्याओं से घेर लिया है। आज मनुष्य को यह सोचना होगा कि इस आभासी दुनिया से पहले उसके अपने आत्मीयजन उसके लिए अधिक आवश्यक हैं। अतः कुछ समय उनके साथ बिताते हुए उसे अपने मोबाइल फ़ोन को अलग रख देना चाहिए तथा इसका विवेकपूर्ण तरीके से प्रयोग करना चाहिए। यदि संभव हो, तो इसके लिए दिनचर्या का आंशिक समय निर्धारित करके ही इसका प्रयोग करना चाहिए। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इंटरनेट बुरा नहीं है, बुराई उसके प्रयोग में हो रही 'अति' में है। और 'अति' तो हर चीज़ की बुरी ही होती हे। कहा भी गया है—'अति सर्वत्र वर्जयेत्।' अतः हम यदि इसका प्रयोग विवेकपूर्ण ढंग से करेंगे, तो निश्चित रूप से विज्ञान का यह अद्भुत करिश्मा हमारे लिए अत्यधिक उपयोगी साबित होगा।

(ग) **करो योग, रहो नीरोग**

आज न केवल महानगरों, बल्कि नगरों व कस्बों में रहने वाले लोगों की दिनचर्या भी भागमभाग से भरी है। ऐसी दिनचर्या से खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार सब कुछ प्रभावित हो रहे हैं, जिसके कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी पैदा हो रही हैं। इन सबका निदान योग में निहित है। आज योग को अपनी जीवनचर्या का अनिवार्य हिस्सा बनाने वाले लोगों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है। लोगों को मोटापे, तनाव, उच्च रक्तचाप, शुगर आदि से राहत देने के साथ-साथ कई असाध्य बीमारियों से छुटकारा दिलवाने में भी योग की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आज के आपाधापी भरे इस दौर में स्वस्थ रहना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं है, किंतु यह बात ध्यातव्य है कि आज योग ने अपनी विशेषताओं से यह सिद्ध कर दिया है कि नियमित रूप से प्रतिदिन आधा घंटे से भी कम समय योग को देकर व्यक्ति नीरोगी जीवन व्यतीत कर सकता है।

आज न केवल भारत, अपितु संपूर्ण विश्व में योग पर लोगों का विश्वास बढ़ रहा है और इसे अपनाकर वे स्वस्थ व नीरोग जीवन व्यतीत कर रहे हैं। 'विश्व योग-दिवस' ने इसके प्रचार-प्रसार में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके विभिन्न आसनों में असाध्य रोगों से छुटकारा दिलवाने की अद्भुत क्षमता निहित है। आज कितने लोग कपालभाती, अनुलोम-विलोम, सूर्य-नमस्कार जैसी योग-क्रियाओं के द्वारा स्वस्थ जीवन का लाभ उठा रहे हैं। अतः जो लोग समयाभाव की बात कहकर इसे नहीं अपना सके हैं, उन्हें अपने स्वास्थ्य के लिए इसे अविलंब अपना लेना चाहिए, क्योंकि जहाँ योग हमारी सोच को सकारात्मक बनाता है, वहीं शरीर को भी प्रतिरोधक क्षमता प्रदान कर नीरोगी जीवन प्रदान करता है।

13. सेवा में

श्रीमान प्रधानाचार्य जी

अ ब स स्कूल

क ख ग नगर

दिनांक–19/09/2017

विषय– कैंटीन में गंदगी फैलाने वाले तथा दादागिरी करने वाले छात्रों की शिकायत।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा दसवीं-'ए' में पढ़ने वाला एक जागरूक छात्र हूँ तथा आपका ध्यान मध्यावकाश के समय कैंटीन में गंदगी फैलाने तथा दादागिरी करने वाले कुछ छात्रों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि मध्यावकाश के समय नवीं कक्षा का दीपेश तथा दसवीं कक्षा का लवनीश अपने कुछ साथियों के साथ कैंटीन में आ जाते हैं और चीज़ें खाकर रैपर, कोल्ड ड्रिंक की बोतलें आदि इधर-उधर फेंक देते हैं। इन पर विद्यालय में चल रहे स्वच्छता कार्यक्रम का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इनसे जो भी ऐसा करने से मना करता है, वे उसी के साथ मारपीट शुरू कर देते हैं। कभी-कभी ये छोटे छात्रों की चीज़ें भी छीनकर खा जाते हैं।

अतः आपसे अनुरोध है कि कृपया मेरा नाम गुप्त रखते हुए इन बच्चों को रँगे हाथों पकड़कर इनपर उचित कार्रवाई करने का कष्ट करें। इस कार्य के लिए मैं आपका अत्यंत आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

अ ब स

अनुक्रमांक-12

कक्षा-दस-'ए'

अथवा

परीक्षा भवन

अ ब स स्कूल

क ख ग नगर

दिनांक–21/10/2017

प्रिय सुरेश,

मधुर स्मृति।

तुम्हारा पत्र मिला, पढ़कर तुम्हारी कुशलता ज्ञात हुई। मैं भी यहाँ पर सकुशल हूँ। पत्र में तुमने लिखा है कि इस बार दशहरा, दीपावली एवं अन्य त्योहार तुमने धूमधाम से नहीं मनाए और इन त्योहारों पर मिले अवकाश को केवल सामान्य अवकाश की तरह बिता दिया। मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि त्योहारों में आ गई बुराइयों का हमें विरोध करना चाहिए, न कि त्योहारों का। त्योहार तो जीवन में उमंग लाते हैं तथा मिल-जुलकर रहने का संदेश देते हैं। दीपावली पर पटाखे फोड़ना उचित नहीं है, किंतु घर को सजाने-सँवारने तथा दीपक जलाने को तो अनुचित नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार होली पर केमिकलयुक्त रंगों का प्रयोग करना अनुचित है, किंतु अबीर-गुलाल या प्राकृतिक रंगों से होली खेलना बिल्कुल भी बुरा नहीं है। मैं चाहता हूँ कि तुम हर त्योहार मनाकर उसका आनंद लो। जीवन को अपने तक समेट लेना, बिल्कुल भी उचित नहीं है। त्योहार मिल-जुलकर मनाओगे, तो तुम्हारा सामाजिक दायरा भी बढ़ेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम भविष्य में त्योहारों के प्रति अपनी उदासीनता छोड़कर उत्साह के साथ इन्हें मनाओगे।

घर में सभी लोगों को यथायोग्य मेरी ओर से अभिवादन कहना।

तुम्हारा मित्र

अ ब स

14.

'साहित्यांगन' के तत्वावधान में

महाकवि-सम्मेलन

देश के चोटी के लगभग सभी कवि अब आपके बीच

राहत इंदौरी, नवाज देवबंदी, प्रवीण शुक्ल, दिनेश रघुवंशी
जैसे सुप्रसिद्ध कवियों से भरी शाम
अब आपके नाम

समय–शाम 7 से 10

स्थान–अ ब स सभागार

प्रवेश निःशुल्क कृपया समय से अपना स्थान ग्रहण कर लें।

साहित्यांगन, ए–125/2, अ ब स नगर, संपर्क– 9876xxxxxx

अथवा

फ़ोर्टिस मेडिकल स्टोर

.....आपका अपना मेडिकल स्टोर

जहाँ दवाइयाँ न कर सकें जेबें ढीली

हर प्रकार की दवाइयाँ अब किफ़ायती दामों पर
दवाइयों पर 5 से 10 प्रतिशत की विशेष छूट

एक हज़ार से अधिक की दवाइयाँ खरीदने पर एक इलेक्ट्रॉनिक थर्मामीटर बिल्कुल मुफ़्त!

फ़ोर्टिस मेडिकल स्टोर, सैक्टर-12, क ख ग नगर, दूरभाष– 8888999xxx